

भारतीय ज्ञान परम्परा सामाजिक जरूरतों की उपज

अमरेन्द्र कुमार आर्य



भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने भारत देश को बनाया है। जिसमें मानव जीवन के लिए भाव, राग और ताल समाहित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति वेद, तंत्र एवं योग की त्रिवेणी है। विगत दिनों प्रख्यात चिंतक जे. नंदकुमार जी ने प्राध्यापकों के कार्यक्रम में बताया था कि 'हजारों साल पहले जब वेदों की रचना हुई। ऐसे सैकड़ों उदाहरण ऋग्वेद में मिलते हैं। ऋग्वेद की शुरुआती ऋचाओं में कहा जाता है कि आ नो भद्राः क्रतवो यंतु विश्वतः 'सात्विक साधु विचार हर दिशा से आने दो। स्वयं को किसी चीज से वंचित न करो। अच्छी बातों को ग्रहण करो, तभी भला होगा।'

भारतीय परंपरा के अनुसार हमारे चिंतन में कई धाराएं हैं, लेकिन पश्चिम ने केवल एक ही धारा को समझा और फैलाया है। विदेशी ताकतों ने हमेशा से ही हमारी ज्ञान परंपरा को दबाकर रखने की कोशिश की है। हमारे विज्ञान और सेवा भाव को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश की गई है, जिसके कारण हमने अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा को बहुत हद तक खो दिया है। आज फिर से हमें अपनी ज्ञान परंपरा और सामाजिक व्यवस्था को समझने और अपने तरीके से परिभाषित करने की जरूरत है। अपनी ज्ञान परंपरा, सामाजिक व्यवस्था और जीवनशैली को बाजारवाद से बचाने की जरूरत है। हमें पश्चिमी सभ्यताओं और विदेशी ज्ञान-विज्ञान को दरकिनार कर अपनी परम्पराओं और मान्यताओं का पुनरोत्थान करते हुए भारतीयता में पूरी तरह रमना होगा। सभी विचारधाराओं के लोगों से संवाद करना होगा और उनको साथ लेकर चलना होगा। हमारी परंपरा विविधताओं का सम्मान करने की है और उनमें एकता स्थापित करने की है, जिसे आज अच्छी तरह से व्यवहार में उतारना होगा ताकि भारत पूरे विश्व में एक बड़ी ताकत के रूप में उभर सके।

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन सहित सभी क्षेत्रों के लिए अदभुत खजाना है। भारतीय दृष्टिकोण से ही ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर हम एक बार फिर विश्व गुरु बन सकते हैं। हमें अपनी मानसिकता को बदलकर अपने जीवन में भारतीयता को अपनाने की जरूरत है। पश्चिम के विकासवादी मॉडल को छोड़कर ही हम दुनिया में खुशहाली ला सकते हैं। हमने अब तक जो कुछ पढ़ा है जो भी हमें पढ़ाया गया है, ज्ञान संगम जैसे कार्यक्रमों में शामिल होकर लगता है कि वह एकतरफा है। हर विषय को पश्चिम के नजरिए से प्रस्तुत कर हमने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का अपमान किया है। हम भारतीय अपनी परम्परा, संस्कृति, ज्ञान और यहाँ तक कि महान विभूतियों को तब तक खास तवज्जो नहीं देते जब तक विदेशों में उसे न स्वीकार किया जाए। यही कारण है कि आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका में योग, आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, होम्योपैथी और सिद्धा जैसे उपचार लोकप्रियता पा

रहे हैं जबकि हम उन्हें बिसरा चुके हैं। हमें अपनी जड़ी-बूटियों, नीम, हल्दी और गोमूत्र का ख्याल तब आता है जब अमेरिका उन्हें पेटेंट करवा लेता है। योग को हमने उपेक्षित करके छोड़ दिया पर जब वही 'योग' बनकर आया तो हम उसके दीवाने बने बैठे हैं। पाश्चात्य संस्कृति में पले-बसे लोग भारत आकर संस्कार और मंत्रोच्चारण के बीच विवाह के बंधन में बंधना पसन्द कर रहे हैं और हमें अपने ही संस्कार दकियानूसी और बकवास लगते हैं। हमारे देश में प्रत्येक राज्य की अपनी भाषा है। भाषाओं की विभिन्नता के समावेश के बावजूद भी अंग्रेजी को बोलचाल का माध्यम बनाया जाता है। मुझे समझ नहीं आता कि जितनी मेहनत हम लोग अंग्रेजी सीखने में करते हैं उतनी मेहनत करके हम अपने ही भारत देश की किसी और भाषा को सीखने में क्यों नहीं करते हैं? पाश्चात्य अथवा अंग्रेजी संस्कृति को दोष देने से पहले हमको अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिए कि वो खुद अपनी संस्कृति के प्रति कितना निष्ठावान है। भारतीय प्रचार माध्यम के बीच स्वस्थ प्रतियोगिता के स्थान पर पश्चिमी मानदंडों के अनुसार प्रतिद्वंद्वी को मिटाने की होड़ लगी हुई है। सनसनीखेज पत्रकारिता के माध्यम से आज पत्र-पत्रिकाएं, ऐसी समाजिक विसंगतियों की घटनाओं की खबरों से भरी होती हैं जिसको पढ़कर हमारी युवाओं की उत्सुकता उसके बारे में और जानने की बढ़ जाती है। युवा गलत तरह से प्रसारित हो रहे विज्ञापनों से इतने प्रभावित हो रहे हैं कि उनका अनुकरण करने में जरा भी संकोच नहीं कर रहे हैं।

आज हम आपने आचरण से गांधी जी के आदर्शों को तिलांजलि दे रहे हैं पर अमेरिका में पिछले कुछ वर्षों में करीब पचास विश्वविद्यालयों और कॉलेजों ने गांधीवाद पर कोर्स आरम्भ किए हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट वर्जीनिया, यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई, जॉर्ज मेरून् यूनिवर्सिटी के अलावा और भी कई विश्वविद्यालयों ने

अपने यहाँ गांधीवाद विशेषकर गांधी जी की अहिंसा और पड़ोसियों विरोधाभास ही लगता है कि हम भारतीय आत्मगौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनदेखी करते हुए अपनी संस्कृति और उसकी समृद्ध विरासत को नकारने का प्रयास कर रहे हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, लेकिन ये परिवर्तन हमें पतन के ओर ले जाएगा। एक समय था जब हमारे युवाओं के आदर्श, सिद्धांत, विचार, चिंतन और व्यवहार सब कुछ भारतीय संस्कृति के रंग में रंगे हुए होते थे। वे स्वयं ही अपने संस्कृति के संरक्षक थे, परंतु आज उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से भ्रमित युवा वर्ग को भारतीय संस्कृति के अनुगमन में पिछड़ेपन का एहसास होने लगा है। जिस युवा पीढ़ी के ऊपर देश के भविष्य की जिम्मेदारी है, जिसकी ऊर्जा से रचनात्मक कार्य सृजन होना चाहिए, उसकी पसंद में नकारात्मक दृष्टिकोण हावी हो चुका है। संगीत हो या सौंदर्य, प्रेरणास्रोत की बात हो या राजनीति का क्षेत्र या फिर स्टेटस सिंबल की पहचान सभी क्षेत्रों में युवाओं की पाश्चात्य संस्कृति में ढली नकारात्मक सोच स्पष्ट होने लगी है। आज महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के साथ विद्यालयों में शिक्षा के लिए जा रहे युवा मन व विद्यार्थियों से जानकारी लें तो पता लगेगा कि हर दूसरी के कानों में तेज धुनों पर जो संगीत बज रहा है वो पॉप संगीत है। युवा वर्ग के लिए ऐसी धुन बजाना दुनिया के साथ चलने की निशानी बन गया है। युवा वर्ग के अनुसार जिंदगी में तेजी लानी हो या कुछ ठीक करना हो तो गो इन स्पीड एवं पॉप संगीत सुनना तेजी लाने में सहायक है। लोक संगीत के स्थान पर युवा पीढ़ी ने पॉप संगीत को स्थापित करने का फैसला कर लिया है। हमारे राष्ट्र में मूलभूत रूप से सांस्कृतिक एकता है। हमारी मूल संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम्' वाली संस्कृति है जिसका अस्तित्व सारे भारत में है। हमारे साहित्य में एकता है, एकरूपता नहीं, एकात्मता है। हम संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के ऊपर उठ



सकते हैं। हमारी भाषाओं में अधुनातन विज्ञान-प्रौद्योगिकी को अभिव्यक्त करने की शक्ति है। भारत में न केवल विश्व-शक्ति बनने की क्षमता है वरन विश्व को भोगवाद के राक्षस से बचाने की भी क्षमता है। अंग्रेजी राज्य में जो विश्वविद्यालय भारत में खुले, वे पाश्चात्य ज्ञान परंपरा की नुमाइंदगी कर रहे थे। इस दौरान भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा को भारी धक्का लगा। राष्ट्र की जरूरतों, व्यावहारिकता और समाज से जुड़ाव जैसी बातों को हम भूल गए। हम सब अपने-अपने स्कूल के दिनों में पाइथागोरस प्रमेय से परिचित होते रहे हैं, लेकिन यह जानना दिलचस्प होगा कि पाइथागोरस से कई सौ साल पहले भारत में इसका प्रयोग किया जाने लगा था। भारत में जब ऋग्वेद की रचना होने लगी तो अलग-अलग यज्ञ के लिए यज्ञवेदी बनने की बात हुई। यह निश्चित किया गया कि किस यज्ञ के लिए किस क्षेत्रफल और आकार-प्रकार की यज्ञवेदी बनाई जाएगी। समाज की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए गणित का उपयोग किया गया और रेखागणित (ज्योमेट्री) उत्पन्न हुई।

पाइथागोरस जिस गणित को दुनिया के सामने लेकर आए, उससे कई सौ साल पहले बौधायन ने शुल्ब-सूत्र में इसकी विस्तार से चर्चा कर दी थी। आज भी भारत का हर राज-मिस्त्री लंबे धागे के साथ वजन लगाए रखता है और भवन निर्माण में उसका तरह-तरह से बखूबी इस्तेमाल करता है। वह शुल्ब-सूत्र की ही उपज है। इसी उपकरण की मदद से वैदिक काल में लोग विभिन्न आकार वाली यज्ञवेदी की रचना करते थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. दिनेश सिंह बताते हैं कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा में केवल बौधायन ही नहीं रहे हैं, बल्कि कात्यायन भी हुए। ऐसे तमाम गणितज्ञ भारत में हुए हैं, जिन्होंने सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर गणित की रचना की। कुल 16 शुल्ब-सूत्र लिखे गए। निश्चित रूप से पाइथागोरस का प्रमेय गणित का ऊंचा सिद्धांत है, लेकिन भारतीय समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर वैदिक काल में जिस गणित की रचना की गई थी, वह आज के वर्तमान पश्चिमी परिभाषा से अलग अद्भुत और उन्नत है। भारत

का ज्ञान और विज्ञान यहां की सामाजिक जरूरतों की उपज रही है। हमारे यहां यही परंपरा रही है, लेकिन आज हम इसमें पिछड़ रहे हैं। हमारे पिछड़ने और उदासीन रहने के कारण तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा कहते हैं कि भारत प्राचीन ज्ञान की उपेक्षा कर रहा है और पश्चिमी संस्कृति की तरफ बढ़ रहा है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी में उन्होंने कहा था- कि आधुनिक भारतीय प्राचीन विचारों की उपेक्षा कर रहे हैं। आधुनिक भारतीय बहुत पश्चिमी हैं। भारतीयों को भारत के प्राचीन ज्ञान पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आधुनिक भारतीयों को अपने ज्ञान को नहीं भूलना चाहिए। संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घ काल तक अपनायी गई पद्धतियों का परिणाम होता है। भारत इस धरती पर एकमात्र देश है जो आधुनिक सुविधा, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को जोड़ सकता है। हमें धार्मिक विश्वास को छूने के बिना शिक्षा, प्राचीन भारतीय ज्ञान के आंतरिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए। आर्य भट्ट, चरक, कनाद, नागार्जुन, हर्षवर्धन, अगस्त्य, भारद्वाज ऋषि, शंकराचार्य, आचार्य अभिनव गुप्त, स्वामी विवेकानंद के साथ सैकड़ों महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने ज्ञान से विश्व की ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया है। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति समूचे विश्व की संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ और समृद्ध संस्कृति है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है। भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं और मूल्य आदि हैं। हालांकि आज के परिवेश में हर एक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है।

भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों

के बीच की घनिष्टता ने भारत को देश बनाया है जिसमें मानव जीवन के लिए भाव, राग और ताल समाहित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति वेद, तंत्र एवं योग की त्रिवेणी है। विगत दिनों प्रख्यात चिंतक जे. नंदकुमार जी ने प्राध्यापकों के कार्यक्रम में बताया था कि 'हजारों साल पहले वेदों की रचना हुई। ऐसे सैकड़ों उदाहरण ऋग्वेद में मिलते हैं। ऋग्वेद की शुरुआती ऋचाओं में कहा जाता है कि आ नो भद्राः क्रतवो यंतु विश्वतः 'सात्विक साधु विचार हर दिशा से आने दो। स्वयं को किसी चीज से वंचित न करो। अच्छी बातों को ग्रहण करो, तभी भला होगा।' इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद शिष्यों को बताते हैं कि "यदि कोई अपने ही धर्म तथा संस्कृति का विशेष रूप से विद्यमानता का स्वप्न देखता है, तो मुझे उस व्यक्ति के प्रति दिल से सहानुभूति है और यह कहना चाहता हूँ कि बहुत जल्द प्रत्येक धर्म एवं संस्कृति के बैनर पर बिना संकोच सहायता करो, संघर्ष नहीं, समावेशन करो विध्वंस नहीं, मेल-मिलाप तथा शांति रखो मतभेद नहीं करना ही लिखा जाएगा।

भारत अपने भाव, राग और ताल से स्पंदन उत्पन्न कर संपूर्ण विश्व को मानवता, भाईचारा और संवेदना का पारिवारिक संदेश देना चाहता है, अपनी जीवंत अमूर्त विरासत जो इसकी वैश्विक सभ्यता की विरासत है। इस विरासत से विभिन्न राष्ट्रों, समाजों तथा संस्कृतियों के बीच संस्कृति एवं सभ्यता का एक संवाद बनाने की प्रक्रिया आरंभ होती है। भारतीय ज्ञान-विज्ञान परंपरा को स्थापित करने के प्रयास स्वाधीनता मिलने के साथ ही किए जाने चाहिए थे, लेकिन औपनिवेशिक मानसिकता के कारण हमने अपने गौरवशाली इतिहास के पन्ने कभी पलटकर देखने की कोशिश ही नहीं की। हमें यह समझना चाहिए कि जिस समाज ने मुझे एक पहचान दी है, सब कुछ दिया है, उसके लिए मुझे भी कुछ करना है। सूचना के स्तर पर ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा का

अंतिम लक्ष्य नहीं होता बल्कि समझ, विचार एवं बुद्धि से संजोए हुए ज्ञान की प्राप्ति करना ही मानवीय पांडित्य की वास्तविक प्राप्ति तथा जीवन बोध का मूल बिंदु कहा जा सकता है। पश्चिमी ज्ञान परिपाटियों का अंधाधुंध अनुकरण कभी लाभदायक नहीं हो सकता। यदि हम अपने मूल विचार नहीं करते और अपने विवेक तथा अपने मौलिक ज्ञान के दर्शन की गहराई तक नहीं जाते। पश्चिमी और भारतीय ज्ञान परंपरा का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए हम पाते हैं कि पश्चिमी संस्कृति के भौतिकतावाद ने उन्नति तो बहुत की है लेकिन यह उन्नति मानसिक खुशहाली को साकार करने से वंचित रह जाती है।

स्वामी विवेकानंद की अनन्य शिष्या निवेदिता ने एक राष्ट्र के रूप में भारत के आंतरिक मूल्यों एवं भारतीयता के महान गुणों की खोज की है। उनकी पुस्तक 'द वेब ऑफ इंडियन लाइफ' निबंधों, लेखों, पत्रों एवं 1899-1901 के बीच एवं 1908 में विदेशों में दिए गए उनके व्याख्यानों का एक संकलन है। सभी भारत के बारे में उनके ज्ञान की गहराई के प्रमाण हैं। भारतीय मूल्यों एवं परम्पराओं की महान समर्थक निवेदिता ने 'वास्तविक शिक्षा- राष्ट्रीय शिक्षा' के ध्येय को आगे बढ़ाया और उनकी आकांक्षा थी कि भारतीयों को 'भारत वर्ष के पुत्रों एवं पुत्रियों' के रूप में न कि 'यूरोप के भद्दे रूपों' में रूपांतरित किया जाए। वे चाहती थीं कि भारतीय महिलाएं कभी भी पश्चिमी ज्ञान और सामाजिक आक्रामकता के मोह में न फंसे और 'अपने वर्षों पुराने लालित्य एवं मधुरता, विनम्रता और धर्म निष्ठा' का परित्याग न करें। उनका विश्वास था कि भारत के लोगों को भारतीय समस्या के समाधान के लिए एक 'भारतीय मस्तिष्क' के रूप में शिक्षा प्रदान की जाए। क्या हम ऐसा नहीं सोच सकते। हम उदीयमान भारत के ऊर्जावान युवा

है, सोचने के साथ करने का हौसला कर ले तो कुछ भी असंभव नहीं हो सकता।

भारतीय ज्ञान-विज्ञान की यह सनातन परंपरा अनादिकाल से है। वह तक्षशिला हो, नालंदा हो या विक्रमशिला विश्वविद्यालय सभी ज्ञान केंद्रों में यह परंपरा जड़ी रही है, इसलिए वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा उच्च स्तरीय रही है। शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण को विकसित करने की जरूरत है। शिक्षा में भारतीय पुरातन ज्ञान परंपरा व संस्कृति के समावेश के नजरिये से यह संगम मात्र विकल्प नहीं है, बल्कि इस दिशा में सच्चा प्रयास है। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा कला संस्कृति, दर्शन, समाज शास्त्र, विज्ञान व प्रबंधन समेत विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण देती है। हमें इस दृष्टिकोण को शिक्षा के क्षेत्र में अपनाकर राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया को और मजबूत बनाना होगा। मौजूदा शिक्षण पद्धति में पश्चिम पक्षीय झुकाव ज्यादा है। ऐसे में शिक्षण पद्धति में भारतीय दृष्टिकोण के विकास के लिए गैर सरकारी व स्वायत्त प्रयासों को बढ़ावा देना, बदलते वैश्विक परिवेश में समय की जरूरत बन चुकी है। मैं समझता हूँ कि भारत के ऊपर जैसे-जैसे पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ता गया, वैसे-वैसे इसकी सनातनी ज्ञान-विज्ञान की परंपरा छिन्न-भिन्न होती जा रही है। हालांकि, नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय के पतन के बाद से ही इसकी शुरुआत हो गई थी और विद्या का स्तर नीचे आने लगा था। इसका मतलब यह नहीं कि हम वर्तमान विश्वविद्यालयीन शिक्षा परंपरा को पूरी तरह खारिज कर दें, क्योंकि विकल्पहीनता के दौर में इन विश्वविद्यालयों ने एक विकल्प दिया था। इन्हीं शिक्षा संस्थाओं से कई प्रतिभाएँ निकलीं, लेकिन आजादी के बाद हम जिस रास्ते पर चले, उससे भारतीय ज्ञान परंपरा का अधिक नुकसान हुआ है। आज भारतीय ज्ञान को

स्थापित करने की नहीं बल्कि इस ज्ञान के व्यापक भंडार को खोजने की जरूरत है। प्राचीन ग्रंथों में छुपे इस ज्ञान के खजाने को खोजकर, उसे सँवारकर मानव कल्याण के लिए इस्तेमाल में लाने की आवश्यकता है।

आज भारत के शैक्षणिक संस्थाओं को इस कार्य के लिए आगे आना होगा और समर्पित भाव से ऐसी परियोजनाओं में जुटना होगा ताकि कोई बाहरी संस्था या इंसान इस भण्डार की खोजकर उसको एक विकृत रूप में दुनिया के सामने पेश न करे। यहां का ज्ञान-विज्ञान युगों से प्रकृति के अनुकूल रहा है और इसी कारण भारत की जीवनशैली भी औरों से हमेशा श्रेष्ठ रही है। आज यही भारत अपनी इसी विशिष्टता को भूलकर आधुनिक दुनिया के पथ पर चलने लगा है। भारतीय ज्ञान, संस्कृति और परंपराओं में ही वह सामर्थ्य है, जिससे भारत अकले नहीं बल्कि पूरे विश्व को शांति पथ पर ला सकता है। भारत को अपने मूल से जुड़े रहने की जरूरत है। भारत अपने ज्ञान को पुनर्जीवित कर दुनिया के बेहतर दिशा की ओर ले जाने में अपना योगदान दे सकता है। भारतीय ज्ञान परंपराएं मनुष्य की आंतरिक शांति और मन की भावनाओं के नियंत्रण में रख सकती है। आज हमारे सामने कई समस्याएं हैं जिनका समाधान भारत के प्राचीन ज्ञान और विज्ञान में हैं। देश की सरहद से ऊपर उठकर हमें मानवता के हित में कार्य करना होगा। भारतीय ज्ञान-विज्ञान की यह सनातन परंपरा अनादिकाल से है। वह तक्षशिला हो, नालंदा हो या विक्रमशिला विश्वविद्यालय सभी ज्ञान केंद्रों में यह परंपरा जड़ी रही है, इसलिए वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा उच्च स्तरीय रही है।

बहरहाल, ज्ञान संगम के बहाने हमें एक नया ज्ञान दर्शन चाहिए जिसमें नीति नहीं ज्ञान केंद्र में हो।

समाज का दर्शन और ज्ञान का दर्शन अलग-अलग है। ज्ञान का काम समाज के दर्शन को समाज कल्याण में मूर्त करना है जबकि समाज का दर्शन ज्ञान से जुड़ अपने आप को प्रकाशवान करना चाहता है। वैचारिक शून्य को भरे बिना, जनता का प्रशिक्षण किए बिना यह संभव नहीं है। हमें इसके लिए समाज नीहित ज्ञान को ही शक्ति केंद्र बनाना होगा। लोगों की आकांक्षाएं, कामनाएं, आचार और व्यवहार मिलकर ही समाज बनाते हैं। इसलिए एक सामाजिक संस्कृति पैदा करना आज की बड़ी जरूरत है, जो कमजोर होते, टूटते समाज को शक्ति दे सके। राज्यशक्ति ने जिस तरह निरंतर ज्ञान शक्ति को कमजोर किया है। ज्ञान शक्ति की सामूहिकता को नष्ट किया है उसे जगाने की जरूरत है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वेदों से लेकर आज के युग तक भारत की प्राणवायु धर्म है। वही हमारी चेतना का मूल है। यह धर्म ही हमारी सामाजिक संस्कृति का निर्माता है। आध्यात्मिक अनुभवों और अंतस की यात्रा के व्यापक अनुभवों वाला ऐसा कोई देश दुनिया में नहीं है। भारत का यह सत्व या मूल ही उसकी शक्ति है। जिन्हें धर्म का अनुभव नहीं वे विचारधाराएँ इसलिए भारत को संबोधित ही नहीं कर सकतीं। वे भारत के मन और अंतस को छू भी नहीं सकतीं। गांधी अगर भारत के मन को छू पाए तो इसी आध्यात्मिक अनुभव के नाते। ऐसे कठिन समय में जब हमारे महान अनुभवों, महान विचारों पर अवसाद की परतें जमी हैं, धूल की मोटी परत के बीच से उन्हें झाड़-पोंछकर निकालना और अपने ज्ञान पर भरोसा करते हुए, उनकी आंखों में झिलमिला रहे भारत के सपनों के साथ तालमेल बिठाना समय की जरूरत है। ज्ञान संगम जैसे आयोजन भारत के ज्ञान क्षितिज को उसका खोया हुआ आत्मविश्वास लौटा सकें तो सार्थकता सिद्ध होगी।

ई-मेल- press.amrendra@gmail.com

मो. 9584557055